

विचार बिन्दु

तुम ये कभी मत सोचो कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना तो सबसे बड़ा अधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य लोग निर्बल हैं। -स्वामी विवेकानंद

ग्रामीण भारत की जमीन से सम्बंधित कानूनों की परेशानी

कुछ दिन पूर्व मुख्यमंत्री जी ने 69 अतिरिक्त जिला कलेक्टर, उपखण्ड, तहसील, उपतहसील कार्यालय के शुभारम्भ, लोकार्पण व सिलान्यास समारोह को सम्बोधित करते हुए कुछ व्यापार व्यक्त किए।

मुख्य मंत्रीजी ने व्यक्त किया कि राजस्व मंडल में तीन-तीन पीढ़ी तक के मामले फंसे हुए हैं, क्या बीतती होगी उन लोगों पर, कल्पना करो, 2,3 पीढ़ियां खत्म हो जाती हैं। उनकी दूसरी व्यथा थी कि उनकी पिछली सरकार ने लोक सेवा गारंटी अधिनियम परित किया किन्तु अधिकारी भाजपा सरकार को समझ नहीं पाए। अधिनियम प्रभावी तरीके से लागू नहीं, इसका दुख है।

इस लेख का विषय ग्रामीण भारत की जमीन सम्बंधित कानूनों से हैं। पहली समस्या खेतों पर आने जाने के रास्ते की है। बहुत से रास्ते कई दशकों से काम में आ रहे हैं किन्तु सेटलमेंट व राजस्व अधिकारियों की गलती से बहुत से खेतों में जाने वाले रास्तों का राजस्व नक्शों में अंकन नहीं है। गांवों में विभिन्न कारणों से आपसी विद्वेष बढ़ने के कारण, आए दिन रास्तों को लेकर विवाद होते हैं। अदालतों में मुकदमेबाजी होती है।

सरकार को अभियान चलाकर, मजमें आम में दरियाफ्त कर इन रास्तों का नक्शों में अंकन करना चाहिए। इसके साथ-साथ गांव से गांव जाने वाले रास्तों और केवल खेतों से खेतों में जाने वाले रास्तों की स्टैंडर्ड चौड़ाई निर्धारित कर नक्शों में दर्शित करनी चाहिए। यह चौड़ाई कम से कम ट्रैक्टर के आने जाने के लिए पर्याप्त हो। इन नक्शों में अंकित रास्तों को राजकीय भूमि का अंकन होना भी आवश्यक है। इसके लिए टिर्नेसी एक्ट में उचित प्रावधान कर, सरकारी सुनवाई कर रिकार्ड दुरस्ती के अधिकार भी बनें। केवल इससे समस्या समाधान नहीं होगा। नक्शों में दर्शाए रास्ते पर अतिक्रमण करने की स्थिति में राजस्व अधिनियम की धारा 91 का उपयोग कर तुरन्त बेदखल किए जाए।

रास्तों के लिए वर्तमान व्यवस्था तो बड़ी हास्यस्पद व मात्र कोलोनाइजर्स के हित साधने वाली है। यह वैसे ही है जैसे कि कोई अपना मकान या उसका कोई हिस्सा किराए पर दे और कहे कि मकान में आने जाने के रास्ते की अनुमति पड़ोसी से ले।

वर्तमान व्यवस्था के अनुसार किसी को अपने खेत में जाना है तो वह जिन खेतों में से उसका रास्ता है उन्हें रास्ते का मूल्य चुकाए और फिर उस रास्ते का अंकन नक्शों में सरकारी रूप में होगा।

कल्पना करें कि एक आदमी को गांव से अपने खेत में जाने के लिए 10 खेतों में से जाना है। अन्य लोग भी इस रास्ते से उपयोग करते हैं किन्तु पार्टीबाजी के कारण 1,2 व्यक्तियों को रोका जाता है तो वे क्रुषक अदालतों के चक्कर लगाकर, फैसला करवाए, सब 10 खेत वालों को मूल्य चुकाए और बाद में उस रास्ते का उपभोग अन्य सब लोग भी कर लें। क्रुषक सरकार का टिर्नेट है और यह लैंड लार्ड का दायित्व है कि उसे अपनी टिर्नेसी के उपभोग के लिए रास्ता दे।

2. राजस्व कानून गत सदी के 50 के दशक में बने थे। तत्समय राजस्व अधिकारी, पटवारी आदि विभिन्न रियासतों से आए थे, शैक्षिक योग्यताएं भिन्न-भिन्न थी, कानून की जानकारी, समझ की दृष्टि से पर्याप्त भी नहीं समझी गई होगी। जनता को भी कानूनों, प्रक्रियाओं की ज्यादा जानकारी थी।

इसलिए इन कानूनों में अधिकार तहसीलदार, उपखण्ड अधिकारी, कलेक्टर आदि को दिए गए अब पटवारी से लेकर ऊपर तक के राजस्व कर्मचारी और ग्राम पंचायतों के पदाधिकारी हर दृष्टि से कानूनों को समझने और उनकी क्रियात्मिक करने-कराने में सक्षम हैं। इसलिए अब एसडीओ के कुछ अधिकार तहसीलदारों को, और तहसीलदारों के अधिकार ग्राम पंचायत, गिरदावर, पटवारी को दिए जाएं।

सरकार को अभियान चलाकर, मजमें आम में दरियाफ्त कर इन रास्तों का नक्शों में अंकन करना चाहिए। इसके साथ-साथ गांव से गांव जाने वाले रास्तों और केवल खेतों से खेतों में जाने वाले रास्तों की स्टैंडर्ड चौड़ाई निर्धारित कर नक्शों में दर्शित करनी चाहिए। यह चौड़ाई कम से कम ट्रैक्टर के आने जाने के लिए पर्याप्त हो।

ग्राम पंचायत को राजस्व कानूनों में राजस्व न्यायालय का दर्जा डिल जाना चाहिए। पंचायत को मुख्यतः सीमा ज्ञान, इनतकाल तस्दीक, सहखातेदारों में खेतों के बंटवारे के अधिकार और पटवारी, गिरदावर मोंके की स्थिति के अनुसार आवश्यक नाप रिपोर्ट्स ग्राम पंचायत को सौंपे और पंचायत फैसले का रिकार्ड में अंकन करे।

3. राजस्व मंडल में आरएएस सदस्यों की नियुक्ति पूर्वानुसार एक उच्चाधिकार समिति द्वारा पूर्णतः मेरिट के आधार पर चयन से हो और सदस्य बनने के उपरांत आरएएस से त्यागपत्र दिया जाए। वर्तमान में एक व्यक्ति सदस्य होने के कारण आईएएस अधिकारियों की अपील, रिवीजन मामलों को सुनवाई करता है। बाद में वह सदस्य आरएएस से प्रमोट होकर कलेक्टर बनता है और उसकी अपीलें राजस्व मंडल सदस्य सुनता है।

(3) आईएएस में से राजस्व मंडल के सदस्य बनने की एक स्वस्थ परम्परा थी कि जिस किसी के सुपर टाइम स्केल में प्रमोशन होता था उन्हें सदस्य नियुक्त किया जाता और फिर अन्य अधिकारियों के परमोशन होने पर उन्हें लगा दिया जाता था। अब अधिकांशतः जिन अधिकारियों से सरकार किसी भी कारण से अप्रसन्न है तो उन्हें सदस्य बना दिया जाता है। जनता में यह धारणा बनी हुई है, इसे समाप्त किया जाए।

(4). स्थगन आदेशों के सम्बंध में—कई बार स्थगन आदेश मिलने के उपरांत पक्षकार येन केन प्रकारेण मुकदमा लम्बा खींचता रहता है। अस्थायी स्थगनादेश की समयवधि एक माह से अधिक नहीं होनी चाहिए। जिन प्रकरणों में स्थगनादेश कन्फर्म किया जाए उनमें दो एडजोर्नमेंट्स का अंतराल अधिक से अधिक 2 माह हो और पक्षकारों को 3, 3 से अधिक एडजोर्नमेंट्स नहीं में। इन सब का कानून, नियमों में आज्ञापक प्रावधान हो।

(5). अदालती फैसले की तुरन्त-फुरत रिकार्ड में अमल की कार्यवाही भी नए विवाद उत्पन्न करती है। देखा गया है कि कुछ मामलों में (किसी भी प्रकार से) फैसला होते ही, पक्षकार हर तरीके अपना कर रिकार्ड में अमल कर लेते हैं जिनसे कई बार अनावश्यक नए विवाद पैदा होते हैं। यह प्रावधान इस दुष्प्रवृत्ति को रोक सकता है कि अपील-रिवीजन की निर्धारित अवधि में अदालती फैसलों के अमल नहीं होगा।

(6) अदालतों में देरी का एक अन्य कारण निचली अदालतों के रिकार्ड समय पर प्राप्त नहीं होना भी है। देखने में आता है कि अधिलेख इक्कठा करने में हो वर्ष निकलना इस देरी को कम करने के लिए यह प्रावधान किया जा सकता है कि अपील अवधि व उसके 15 दिन की अवधि में फैसला करने वाली अदालत, केस का रिकार्ड निचली अदालतों में नहीं भेजेगी। इस अवधि में अपील आदि होने पर फैसला करने वाली अदालत अपना व नीचे से मंगवाया अधिलेख, जहां अपील हुई है उस कोर्ट को भेजे दे।

(7) मंदिर मूर्ति के नाम व माफो मंदिर की भूमियां— रियासत काल की जागों के रिजम्पसन के बाद उन भूमियों पर काबिज क्रुषकों को खातेदारी अधिकार दिए गए। जागीरदारों को उनकी खुदकाशत की भूमि पर खातेदारी अधिकार दिए गए। मंदिर की मूर्ति भी जागीरदार की हैसियत मानी गई। किन्तु अभी भी बहुत से मामले अटके हुए हैं। इन प्रकरणों में उच्चतम न्यायालय की भी व्यवस्था आ चुकी। शेष मामलों को अभियान चला कर निपटारा जाना चाहिए।

कुछ तो पूरे गांव ही मूर्ति/मंदिर के नाम हैं, जैसे अजमेर का देवमाली गांव पूरा ही श्री देवनायण महाराज की खातेदारी में। ऐसे ओर भी प्रकरण हो सकते हैं। इन ग्रामों में काबिज काशतकारों को यदि खातेदारी अधिकार देने में कोई बड़ी कानूनी, प्रशासनिक बाधा हो तो उन्हें कम से कम इन्हेरीटेबल राइट्स वाले उप क्रुषक तो बनाओ। रेवनुए नक्शों में कबीजों के खेत तो दर्शाए जाएं वैसे इन किसानों से एकमुश्त राशि मंदिर ट्रस्ट में लेकर खातेदारी अधिकार देने पर विचार किया जाना चाहिए।

-अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से. नि.)

महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति

विद्या बिना मति गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शुद्ध गए, इतने अनर्थ एक अविद्या ने किए। विद्या अर्थात् शिक्षा के बारे में महात्मा ज्योतिबा फूले के मुक्तिनामी विचारों की वाहक, शोषणमुक्त समाज के लिए संघर्ष की सहयात्री सावित्रीबाई फूले को सादर नमन।

भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग की ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन 2019-20 की रिपोर्ट के आंकड़ों के आधार पर स्कूली एवं उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता में तेजी से सुधार हो रहा है। कक्षा 8वीं तक तथा पीजी एवं यूजी के स्तर पर महिला विद्यार्थियों का नामांकन पुरुष विद्यार्थियों से ज्यादा हो गया है। भारत में स्कूलों की संख्या 15 लाख 7 हजार 708 एवं राजस्थान में यह संख्या 1 लाख 6 हजार 240 है, जिनमें करीब



डॉ.रमेश बैरवा

25 करोड़ विद्यार्थी पढ़ते हैं। इन 25 करोड़ विद्यार्थियों में से 13 करोड़ लड़के एवं 12 करोड़ लड़कियां हैं। स्कूल शिक्षकों की संख्या राष्ट्रीय स्तर पर 96 लाख 86 हजार 577 एवं राजस्थान में 7 लाख 74 हजार 21 है। राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल शिक्षकों में 50 प्रतिशत महिला शिक्षक हैं तथा राजस्थान में यह आंकड़ा 39 प्रतिशत

का है। देश में 1043 विश्वविद्यालय एवं 42343 महाविद्यालय हैं। राजस्थान में 89 विश्वविद्यालय एवं 3380 महाविद्यालय हैं। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की कुल संख्या 3 करोड़ 85 लाख है जिसमें से एक करोड़ 96 लाख पुरुष एवं एक करोड़ 89 लाख महिला विद्यार्थी हैं। महिला विद्यार्थियों का प्रतिशत 49 है। पुरुष विद्यार्थियों का जीईआर 26.9 एवं महिला विद्यार्थियों में यह 27.3 का है। राजस्थान में यह 24.1 है जिसमें 24.3 पुरुष एवं 23.9 महिला का है।

दूरस्थ शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों में 44.5 प्रतिशत महिला विद्यार्थी हैं। 78 प्रतिशत कॉलेज निजी क्षेत्र में हैं। उच्च शिक्षा में कार्यरत कुल 1503156 शिक्षकों में से 57.5 प्रतिशत पुरुष शिक्षक एवं 42.5 प्रतिशत महिला शिक्षक हैं। नॉन टीचिंग स्टाफ में 100 पुरुष कर्मियों पर 51

राष्ट्रीय स्तर पर 50 तथा राजस्थान में 39 फीसदी महिला शिक्षक हैं

महिला कर्मियों वर्ष 2019 में 38986 विद्यार्थियों को पीएचडी की डिग्री दी गई, जिनमें से 21 हजार 577 पुरुष एवं 17409 महिला शोधार्थी हैं।

प्रदेश स्तर के निजी विश्वविद्यालय, डीमड यूनिवर्सिटी एवं इंस्टीट्यूट्स आफ नेशनल इंफॉर्मेशन में महिला विद्यार्थियों का नामांकन सबसे कम है। पीएचडी के 2 लाख 2 हजार 550 में से 1 लाख 11 हजार 444 पुरुष एवं 92 हजार 106 महिला विद्यार्थी हैं। राजस्थान के 10 हजार 850 पीएचडी शोधार्थी में 5 हजार 478 पुरुष एवं 5 हजार 372 महिलाएं हैं। पीजी में अखिल भारतीय स्तर पर

हुए कुल नामांकन 43 लाख 12 हजार 245 में से 18 लाख 60 हजार 163 पुरुष एवं 24 लाख 52 हजार 372 महिला विद्यार्थी हैं। अर्थात् करीब 6 लाख महिला विद्यार्थी अधिक हैं। अंडर ग्रेजुएट विद्यार्थियों की कुल संख्या 3 करोड़ 6 लाख 47 हजार 287 में से 1 करोड़ 55 लाख 63 हजार 77 पुरुष एवं 1 करोड़ 50 लाख 84 हजार 210 महिला विद्यार्थी हैं। अर्थात् 4 लाख 78 हजार महिला विद्यार्थी अधिक हैं। राजस्थान में पीजी में 2 लाख 46 हजार 73 में 1 लाख 15 हजार 851 पुरुष एवं 1 लाख 30 हजार 222 महिला विद्यार्थी हैं। यूजी के 17 लाख 61 हजार 65 में से 9 लाख 7 हजार 391 पुरुष एवं 8 लाख 53 हजार 674 महिला विद्यार्थी हैं।

डॉ.रमेश बैरवा
प्रदेश स्तर पर
शिक्षा बचाओ आंदोलन

उत्तराखंड स्थित केदारकांठा चोटी पर 280 फीट लम्बा तिरंगा फहराया

गंगापुर सिटी, (निस)। इंडियन एडवेंचर फाउंडेशन से सर्वाई माधोपुर जिले के गंगापुर सिटी निवासी पीयूष जतिन सहित 18 साथियों ने उत्तराखंड स्थित केदारकांठा चोटी पर 280 फीट का भारतीय ध्वज फहराया।

इंडियन एडवेंचर फाउंडेशन के इस अभियान का नेतृत्व कर रहे छत्तीसगढ़ के पर्वतारोही रोहित झा में बताया कि इस ट्रेक में राजस्थान सर्वाई माधोपुर गंगापुर से पीयूष व जतिन का चयन हुआ साथ ही सिरौली से शंकर शामिल हुए। रोहित ने बताया कि दिल्ली सहित छह राज्यों ने भाग लिया जिसमें राजस्थान, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ जिसमें कमलेश, अभय, पल्लवी, निशा आदि मौजूद रहे। ये दल देहरादून से सैकरी 6400००



केदारकांठा चोटी पर तिरंगा फहराते पर्वतारोही।

फीट, सैकरी के जुड़ा का तालाव 9100 फीट बेस कैम्प प्रथम बेस कैम्प पहुंचे। द्वितीय बेस कैम्प हरगंवा होते हुए तीसरे दिन केदारकांठा बेस कैम्प

11250 फीट पहुंचे। इसी तरह चौथे दिन केदारकांठा बेस से केदारकांठा पीक 12500 फीट पर पहुंचे। रोहित ने बताया कि रात्रि 3 बजे लगातार

दल में राजस्थान के सर्वाई माधोपुर, गंगापुर से पीयूष व जतिन का चयन हुआ

दिल्ली सहित राजस्थान, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ के लोग दल में शामिल रहे

तापमान रहा। इस स्थिति में 12500 फीट पर 28 फीट का भारतीय ध्वज फहरा कर सभी अपने आप को गौरवान्वित महसूस किया। पर्वतारोही संजय सिंह भोज, राजस्थान स्टेट फील्ड ऑफिसर नरेंद्र कुमार शर्मा, स्टेट एडवेंचर ऑफिसर रंजीत, स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर प्रियंका, राजस्थान के डिप्टी डायरेक्टर एल एन वैरवा ने बधाईया दी। इससे पूर्व इंडियन एडवेंचर फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष इफ्राईम अहमद व चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर गायस अहमद ने सभी प्रतिभागियों व ट्रेक लीडर रहे रोहित झा को इस सफलता पर बधाई दी।

भरतपुर की सौ से अधिक संस्थाओं पर संकट के बादल मंडराये

भरतपुर, (निस)। उत्तरी भारत की 100 वर्ष से अधिक पुरानी ऐतिहासिक साहित्यिक संस्था श्री हिंदी साहित्य समिति पर आजकल संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इस हिंदी साहित्य समिति में पुराने समय में विश्व कवि रविन्द्र नाथ टैगोर, पंडित मदन मोहन मालवीय, राजर्षि पुरुशोत्तम दाम टंडन, पूर्व उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, पूर्व मुख्यमंत्री मोहन लाल सुखाडिया, बृजेंद्र सर्वाई महाराज कृष्ण सिंह, राजमाता गिरांज कौर, मौरजारि देसाई, पूर्व उपराष्ट्रपति बीडी जली, कथाकार भीष्म सहानी, कहानी कार कमलेश्वर जैसी महान साहित्यिक हस्तियां समिति को गौरवान्वित कर चुकी है।

लेकिन इस समिति में पिछले लंबे समय से दो कर्मचारियों का वेतन नहीं मिलने की वजह से अब कोर्ट ने समिति के एक भाग को नीलामी करने के आदेश दिए हैं। जिसकी खाना में अब कोर्ट के स्टॉफ ने नीलामी की कार्यवाही किए जाने से शहर में साहित्यिक संस्था पर छा रहे संकट के बादलों को दूर किए जाने की चर्चा बनी रही। भरतपुर की हिंदी साहित्य समिति के एक भाग की

दो कर्मचारियों का वेतन नहीं मिलने पर कोर्ट ने संस्था के एक भाग को बेचने के आदेश दिए

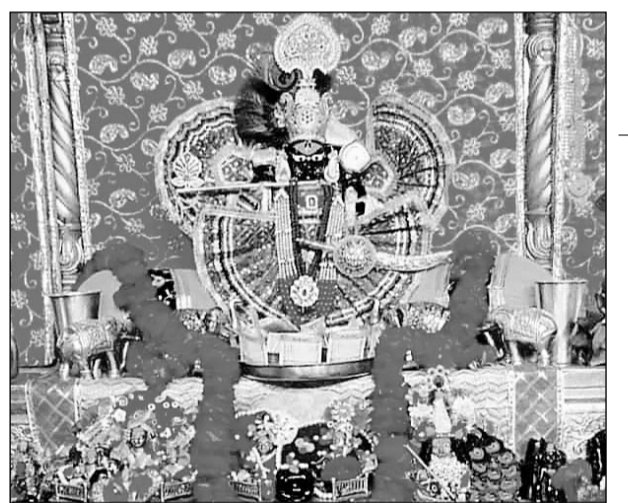
शुक्रवार को नीलामी होनी थी, जिसके लिए कोर्ट के सेलअमीन विकास आनन्द सहित अन्य लोग हिंदी साहित्य समिति में समिति को नीलामी की कार्यवाही करने के लिए शुक्रवार को पहुंचे लेकिन नीलामी में एक भी खरीदार ने बोली नहीं लगाई। हालांकि नीलामी के लिए तीन जनों को नीलामी में शामिल होना जरूरी था लेकिन एक व्यक्ति नीलामी में पहुंचा जिससे नीलामी का कोरम पूरा नहीं होने से इस समिति की नीलामी आज नहीं हो सकी जिससे समिति व समिति के साहित्यिक प्रेमियों लोगों को राहत मिली है। बताया गया है कि दो कर्मचारी दाऊ दयाल लाडवैरियन व त्रिलोकी नाथ शर्मा क्लर्क ने 17 साल की सैलरी पाने के लिए केस न्यायालय में कर रखा था।

मंडफिया दरबार के भंडार से 7 करोड़ तीन लाख की राशि निकली

मंडफिया, (निस)। मेवाड़ अंचल के प्रमुख तीर्थ स्थल भगवान श्री सावलिया सेठ मंडफिया के दरबार में गत 1 जनवरी नववर्ष पर खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती शुक्रवार को संपन्न हुई। श्री सावलिया जी मंदिर बोर्ड चेयरमैन कन्हैयालाल वैष्णव ने बताया कि भंडार की गिनती पांच चरणों में हुई, जिसमें सभी को मिलाकर कुल एक माह में भंडार से 7

भंडार से 142 ग्राम सोना एवं 7 किलो 140 ग्राम चांदी भी प्राप्त हुई

भंडार की गिनती पांच चरणों में संपन्न हुई



91 लाख 73 हजार 973 रुपए मंदिर कार्यालय में भेंट जमा करवाए। वैष्णव ने बताया कि भंडार से 142 ग्राम सोना एवं 7 किलो 140 ग्राम चांदी प्राप्त हुई और मंदिर कार्यालय में 271 ग्राम सोना एवं 29 किलो 384 ग्राम 500 मिलीग्राम चांदी भेंट जमा हुई। भंडार गिनती के समय मंदिर बोर्ड सदस्य मदन लाल व्यास, भैरू लाल सोनी,

विजय सिंह चौहान, भैरू लाल गाडरी, प्रशासनिक अधिकारी कैलाश चंद्र दाधीच, केशिपूर नंदकिशोर टैटर, मंदिर प्रभारी राजेंद्र शर्मा, कार्मिक प्रभारी लेहरी लाल गाडरी, अशोक तिवारी, भेंट कक्ष के संजय कुमार मंडोवार, गजेंद्र गौड़, राजमल बरेट सहित मंदिर कर्मचारी एवं बैंक स्टाफ उपस्थित थे।

जल प्रकृति का वरदान

जल क्या है:- वैदिक पुराणों के अनुसार पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के लिये जल पांच तत्वों में से एक है। आम कहावत है कि- जल विन सब सुना। ऋग्वेद में भी इसका उल्लेख किया गया है कि 'आपो वे सर्वा देवता' यानि समस्त देवताओं का स्वरूप जल है। जल प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान है।

वर्तमान में जल संकट क्यों है:- पर्यावरण अस्तित्वन से वर्षों में कमी। जनसंख्या में वृद्धि एवं अनियोजित औद्योगिक कारण। परम्परागत जल स्रोतों जैसे झीलें, तालाब, कुंआं, बावड़ियां एवं नलकूपों का सूखना। जल संकट के दुष्परिणाम:-

जल संकट के कारण शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या का पलायन होना तथा ग्रामीण विकास की गति रुकना। पर्यावरण क्षेत्र में अस्तित्वन होना, बारिश कम होना आदि। वर्तमान जल स्रोतों में कमी होना तथा भूजल की गुणवत्ता में गिरावट आना।

जल संरक्षण कैसे करें:- (अ) नगरीय स्तर पर- धरेलू नलों एवं मोहल्लों के नलों से व्यर्थ जल बहने एवं रिसाव पर पाबंदी/रोका। भूमिगत टॉके बनवा कर एकत्रित करना चाहिए। बारिश में छत एवं मकानों के व्यर्थ जल को टॉके में संरक्षण करना। नगर शहरों में तालाब, कुएं एवं

बावड़ियों का रखरखाव समय पर करना चाहिए, जिससे उनमें जल आवक बना रहे। आम नागरिकों को जल संरक्षण के लिये जागरूक करना शहरों में पर्यावरण संरक्षण के कार्य पर विशेष ध्यान दिया जावे।

(ब) ग्रामीण स्तर पर:- प्रत्येक घर एवं पंचायत स्तर पर वर्ष के जल संग्रह के लिये भूमिगत टॉके बनवाये जाने चाहिये। पारम्परिक जल स्रोतों में जल आवक के लिये नहरों-नलों की सफाई होनी चाहिये। वर्षा ऋतु में पानी के केचमेन्ट क्षेत्र में पानी की निकासी सुव्यवस्थित कर एनीकट एवं बांधों का निर्माण करना चाहिये, जिससे भूमिगत जल पुनः

रिचार्ज हो सके। सिंचित क्षेत्र में फव्वारों से सिंचाई कर बूंद-बूंद पानी से सिंचाई, खुले नालों की जगह पाईप का उपयोग करें।

महिलाओं को जल संरक्षण के प्रशिक्षण से 60 प्रतिशत आबादी लाभांशित हो सकेगी। कम सिंचाई वाली फसलों का उत्पादन करना आदि। सड़क पर बहने वाले वर्षा जल का पुनर्भरण/संरक्षण करना। वन पर्यावरण को अधिक महत्व दिया जावे।

बाढ़ के पानी का बहाव रोकना एवं बांध बनाकर उस पानी का संरक्षण करना।

जल संरक्षण की उपयोगिता:- शहरी एवं ग्रामीण जनता के

पलायन को रोका जा सकेगा। जल संरक्षण से भूमिगत जल स्रोतों को रिचार्ज किया जा सकेगा। प्रशिक्षण, प्रचार एवं प्रसार माध्यम से जल निकासी।

बूंद-बूंद पानी संरक्षण के दृढ़ संकल्प लेने से जल संरक्षण संभव हो सकता है। अतः जल संरक्षण विषय को विशेष महत्व देकर स्कूली शिक्षा एवं महिला शिक्षा में तथा जल संरक्षण पर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विषय विशेषज्ञ का पाठ्यक्रम शुरू किया जाना चाहिये।

डॉ.सुभाष पुरोहित,
पूर्व सदस्य, राजस्थान
अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड



राशिफल

शनिवार 8 जनवरी, 2022

पौष मास शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2078, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रविवार प्रातः 7:10 तक, वारियान योग दिन 11:39 तक, तैतिल करण दिन 10:43 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृश्चिक, बुध-मकर, गुरु-कुम्भ, शुक-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में। आज अनुरूप छठ (बंगाल में) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:34 से 9:57 तक, चर 12:53 से 1:51 तक, लाभ-अमृत 1:51 से 4:27 तक।

राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:44

मेघ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटक हुए ब्रवावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

धनु
घर-परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आपसी अनबन के कारण आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों को जमाना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कन्या
वर्षा में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक-आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।